2025 प्रार्थना का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस
आधुनिक गुलामी और मानव तस्करी
के पीड़ितों के लिए

जीवन के लिए प्रकाश

मुक्ति फौज

वयस्क उपदेश

निर्माणकर्त्ता **लेफ्टिनेंट कर्नल सेलेस्टे न्हाकुम्बा**
केन्या ईस्ट टैरिटरी

केंद्रीय बिंदु: परमेश्वर ने सभी लोगों को स्वतंत्र होने के लिए बनाया है – अंधेरे से प्रकाश की ओर बढ़ते हुए।

'यीशु ने फिर लोगों से कहा, "जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।"' (यूहन्ना 8:12)

'इसके पश्चात् मूसा और हारून ने जाकर फिरौन से कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है : 'मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे जंगल में मेरे लिये पर्व करें'।"' (निर्गमन 5:1)

'और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया; और उसने दृष्टि उठाकर देखा कि झाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती।' (निर्गमन 3:2)

परिचय

इस विशेष रविवार को, दुनिया भर में मुक्ति फौजिये आधुनिक गुलामी और मानव तस्करी (MSHT) के पीड़ितों और बचे लोगों, उनके परिवारों और दोस्तों, और मांग पैदा करने वालों, तस्करों और शोषकों के लिए प्रार्थना करने और मध्यस्थता करने के लिए एकत्रित हो रहे हैं। हम ऐसे परमेश्वर की आराधना करते हैं और उसका अनुसरण करते हैं जो अपनी रचना की प्रार्थना सुनता है, जो उसकी छवि में बनाए गए हैं (उत्पत्ति 1:26-27) ताकि वह अपने स्वभाव को प्रतिबिंबित कर सके, जिसमें चुनाव करने और स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करने की क्षमता शामिल है, जिससे पीड़ितों को सोचने, तर्क करने और गुलामी, मानव तस्करी और शोषण की स्थितियों से खुद को मुक्त करने की अनुमति मिलती है।

इस वर्तमान वर्ष में, जैसा कि हम आधुनिक गुलामी और मानव तस्करी के पीड़ितों के लिए प्रार्थना का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस मनाते हैं, परमेश्वर ने लोगों को यूहन्ना 8:12 पर आधारित इस चुनौतीपूर्ण विषय 'जीवन के लिए प्रकाश' पर विचार करने के लिए प्रेरित किया है, जहाँ यीशु खुद को दुनिया का प्रकाश कहते हैं।

मुझे यकीन है कि हम सभी ने अंधेरे में चलने का अनुभव किया है और जानते हैं कि यह क्या भावनाएँ ला सकता है, जिसमें शामिल हैं: भय या असुरक्षा; अलगाव; शांति; आस-पास क्या है यह न देखने या न जानने से उत्पन्न जिज्ञासा, जो अज्ञात के बारे में डर और चिंता का कारण बन सकती है।

यद्यपि प्रकाश की शक्ति है जो जीवन लाती है, जिसे यीशु और केवल यीशु ही लाता है। यूहन्ना 8:12 में, यीशु ने पुष्टि की: 'मैं जगत की ज्योति हूँ। जो कोई मेरे पीछे चलेगा, वह कभी अंधकार में नहीं चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।' यह घोषणा यीशु की जिम्मेदारी को प्रकट करती है, क्योंकि वह आत्मिक अंधकार को दूर करता है, स्पष्टता, आशा और जीवन का नवीनीकरण लाता है। उसका प्रकाश न केवल दिशा और उद्देश्य प्रदान करता है, बल्कि पाप को उजागर करता है और जीतता है, जिससे विश्वासियों को ईश्वरीय अनुग्रह और प्रेम की पूर्णता का अनुभव प्राप्त होता है।

यीशु का प्रकाश सभी को शामिल करता है और सभी को प्रकाशित करता है। यह सभी में चमकता है, जिसमें मानव तस्करी, शोषण और हिंसा के शिकार लोग भी शामिल हैं, जो उत्पीड़न और अपमान के अधीन हैं, और अपनी स्वतंत्रता और स्वतंत्र रूप से जीने के अपने अधिकार से वंचित हैं।

जिन मसीहियों ने प्रकाश प्राप्त किया है, उनके लिए परमेश्वर सभी को बोलने और इस प्रकाश को साझा करने के लिए आमंत्रित कर रहा है, जो मसीह है, वह जो उन लोगों के लिए जीवन, आशा और मन और परिस्थितियों के नवीनीकरण का वादा करता है जो अंधकार में चल रहे हैं और उसका अनुभव कर रहे हैं - विशेष रूप से वह जो तस्करी, शोषण और हिंसा का सामना कर रहे हैं।

इस निमंत्रण को स्वीकार करने के लिए, हमें दो महत्वपूर्ण बातें समझने की आवश्यकता है।

सबसे पहले, हमें निर्भयतापूर्वक परमेश्वर की बुलाहट का पालन करने की आवश्यकता है जैसा कि मूसा और हारून ने निर्गमन 5:1 में किया था, जहाँ यह उल्लेख किया गया है: 'इसके पश्चात् मूसा और हारून ने जाकर फिरौन से कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है : 'मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे जंगल में मेरे लिये पर्व करें'।"' फिरौन से संपर्क करने के तरीके के बारे में उनके डर और पहले की हिचकिचाहट के बावजूद, मूसा और हारून ने विश्वास में साहसपूर्वक कदम बढ़ाया, यह भरोसा करते हुए कि परमेश्वर उन्हें उनके लक्ष्य में आगे ले जाएगा और वे सफल होंगे।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि कार्य के लिए परमेश्वर का निमंत्रण आसान नहीं होगा। जरूरत पड़ने पर हमें अतिरिक्त प्रयास करने होंगे, खासकर मुश्किल हालातों में, हमें उन लोगों की आवाज बनने को तैयार रहना होगा जिनकी आवाज दबी हुई है, सभी पीड़ित और शोषित लोगों के अधिकारों के लिए हमें खुलकर बोलना होगा। हमें न्याय के लिए बोलना चाहिए और गरीबों और बेसहारा लोगों के लिए खड़ा होना चाहिए, जैसा कि नीतिवचन 31:7-9 में कहा गया है।

दूसरा, अगर हमें मसीह के प्रकाश को बोलने और साझा करने के लिए इस निमंत्रण में कदम रखना है - जो कि जीवन, आशा और नवीनीकरण का वादा है, जो कि उसकी सारी सृष्टि के लिए है - जिसमें वे लोग भी शामिल हैं जिन्होंने तस्करी, शोषण और हिंसा का अनुभव किया है, तो हमें परमेश्वर के अधिकार और मसीह में हमारी स्थिति को समझने की आवश्यकता है, जिसकी पुष्टि इफिसियों 2:4-6 में की गई है: 'परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है), और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया...'

हमें यह समझना होगा कि परमेश्वर ने न केवल यीशु को जिलाया और उसे सभी अधिकारों से ऊपर स्वर्गीय स्थानों में अपने पास बैठाया, बल्कि उसने हम सभी के साथ भी ऐसा ही किया। जैसा कि उसने निर्गमन 5 में मूसा और हारून के साथ किया था, परमेश्वर ने उस समय के सबसे शक्तिशाली शासक पर अपना अधिकार जताया - उस व्यक्ति के प्रति जो खुद को परमेश्वर के रूप में देखता था - ताकि अपने लोगों को मुक्त कर सके। इस शासक को सच्चे परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मुक्त करने का आदेश दिया जा रहा था। चाहे परिस्थिति कितनी भी कठिन या जटिल क्यों न हो, चाहे मानव तस्करी, शोषण और हिंसा की स्थिति का अनुभव कितना भी कठिन क्यों न हो, भरोसा रखें कि परमेश्वर की शक्ति सबसे ऊपर है, और उसकी योजना प्रबल होगी।

मसीह में इस अधिकार को व्यक्त करने के लिए, हमें निम्न करने की आवश्यकता है:

- अपने नजरिए को नया करें और आत्मविश्वास से खड़े होने का हक समझें। मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान में खुद को उसके साथ जोड़ें और याद रखें कि हमें उसके साथ जिलाया गया है ताकि हम आवाजहीन लोगों के लिए आवाज उठा सकें और उत्पीड़ितों का बचाव कर सकें, जैसा कि यीशु ने लूका 4:18-19 में कहा है।

- जो पीछे रह गया है, उसे भूल जाइये। फिलिप्पियों 3:13-14 में, पौलुस कहता है: 'हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ; परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।'

युद्ध जीतने के लिए, अंधकार में रहने वालों के लिए और उनकी ओर से खड़े होने के लिए यही जरूरी है - हमें अपने अतीत को पीछे छोड़कर विश्वास में आगे बढ़ना, उस भविष्य की ओर जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किया है, जबकि प्रकाश की चमक को दर्शाते हुए।

अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपने पुराने स्वभाव को मरने दें, जो है:

- **न्याय की पैरवी करना:** हमें उन लोगों के लिए बोलने और उनकी आवाज को उठाने के लिए बुलाया गया है जो खुद के लिए नहीं बोल सकते हैं, जैसा कि नीतिवचन 31:8-9 में जोर दिया गया है। मानव तस्करी के शिकार लोगों सहित उत्पीड़ितों के अधिकारों की रक्षा करना, कमजोर और हाशिए पर पड़े लोगों की रक्षा करने के बाईबल के आदेश के अनुरूप है।

- **गरिमा बहाल करना:** MSHT के पीड़ित अक्सर अमानवीयकरण और शोषण का शिकार होते हैं। हमारी भूमिका उनकी बहाली की दिशा में काम करना है, उनकी गरिमा, चंगाई और स्वतंत्रता को बढ़ावा देने वाली मदद की पेशकश करना।

- **जागरूकता बढ़ाना और रोकथाम का समर्थन करना:** MSHT के बारे में जागरूकता बढ़ाना और निवारक उपायों का समर्थन करना महत्वपूर्ण है। इसमें समुदायों को शिक्षित करना, कमजोर लोगों की रक्षा करने वाले कानूनों का समर्थन करना और पीड़ितों को बचाने और पुनर्वास करने के लिए जमीन पर काम करने वाले संगठनों के साथ साझेदारी करना शामिल है।

निष्कर्ष और कार्रवाई के लिए बुलाहट

परमेश्वर ने इस्राएलियों को गुलामी से बाहर निकालकर बहुतायत की भूमि पर पहुँचाया, जो प्रकाश से जीवन का प्रतीक है। जिस तरह उनके प्रकाश ने उन्हें जंगल में मार्गदर्शन किया, यह उस नए जीवन और आशा का भी प्रतिनिधित्व करता है जो वह हमें प्रदान करते हैं। हर पीढ़ी में, परमेश्वर का प्रकाश अपने लोगों को शारीरिक और आत्मिक गुलामी से बाहर निकालकर उनके साथ जीवन की पूर्णता की ओर ले जाता है। अंततः, जीवन के लिए इस लड़ाई में हमारा उद्देश्य न्याय, दया और प्रेम के लिए परमेश्वर के हृदय को प्रतिबिंबित करना है, जो बंधन में हैं उन्हें मुक्त करने और उन्हें सम्मान और आशा के जीवन में वापस लाने के लिए काम करना है, क्योंकि यह परमेश्वर का उद्देश्य है: 'इसके पश्चात् मूसा और हारून ने जाकर फिरौन से कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है : 'मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वह जंगल में मेरे लिये पर्व करें'।"'
(निर्गमन 5:1)

हमें दुनिया में इस प्रकाश का प्रतिबिंब बनने के लिए आमंत्रित किया जाता है। हम उत्पीड़ित और घायल लोगों का समर्थन, देखभाल और उनके लिए आशा का स्रोत बन सकते हैं। इस बात पर चिंतन करने के लिए कुछ समय निकालें कि आप अपने समुदाय और जीवन में ऐसा कैसे कर सकते हैं।

जैसा कि हम प्रार्थना के इस दिन को मनाते हैं, यह संदेश हमें याद दिला सकता है कि सबसे अंधेरी परिस्थितियों में भी, जीवन का प्रकाश मसीह के अनुग्रह और दया के माध्यम से चमकता है।

'जीवन के लिए इस लड़ाई में हमारा **उद्देश्य न्याय, दया और प्रेम** के लिए परमेश्वर के हृदय को प्रतिबिंबित करना है'